भक्ति-आन्दोलन

भक्ति-आन्दोलन भारतीय इतिहास का एक प्राचीन एवं महत्वपूर्ण आन्दोलन था। प्राचीन काल से हिन्दू-दर्शन में जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष बताया गया है और इसे प्राप्त करने की तीन मार्ग हैं : (1) ज्ञान मार्ग (2) कर्म मार्ग, (3) मोक्ष मार्ग। मोक्ष प्राप्ति के लिए दो मार्ग अत्यंत कठिन हैं। इसलिए सामान्य जनता भक्ति मार्ग की ओर उन्मुख हुई।

भक्ति आंदोलन का उद्भव

भक्ति आंदोलन के उद्भव के संबंध में विभिन्न प्रकार के मत प्राप्त होते हैं। वेबर और ग्रीयर्सन की मान्यता है कि भक्ति और ईश्वर की एकता का विचार हिन्दुओं ने ईसाईयों से प्राप्त किया था। दूसरा मत है कि भक्ति-आन्दोलन का उद्भव इस्लाम के प्रभाव के कारण हुआ। कुछ विद्वानों का मानना है कि इस्लाम के सिल्लत (भाई-चारे) के सिद्धान्त ने भक्ति-आंदोलन के प्रचारकों को अत्यधिक प्रभावित किया था। लेकिन बार्थ का मत है कि भक्ति-आंदोलन हिन्दू धर्म का ही एक अंग था।

भक्ति आंदोलन के उद्देश्य

इतिहासकार SID आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव के अनुसार

"भक्ति आंदोलन के दो मुख्य उद्देश्य थे — प्रथम, हिंदू धर्म में सुधार करना जिससे वह इस्लाम प्रचार और प्रसार के आक्रमणों को झेल सके; और द्वितीय, हिंदू एवं इस्लाम धर्म में समन्वय स्थापित करना और दोनों धर्मों में सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करना।" दूसरे उद्देश्य को प्राप्त करने में यह आंदोलन पूर्ण रूप से असफल सिद्ध हुआ।

भक्ति-आंदोलन के उदय के कारण

(1) ब्राह्मण धर्म की जटिलता —

ब्राह्मणवाद मूलरूप से एक बौद्धिक सिद्धान्त बन कर रह गया था। वस्तुतः इस समय हिंदू धर्म का स्वरूप अत्यंत जटिल हो गया था और उपवास, कर्मकांड व आडंबर उत्तरोत्तर बढ़ रहे थे, अतः साधारण जनता इनका अनुसरण नहीं कर पा रही थी। फलतः भक्ति-आंदोलन के उदय का मार्ग प्रशस्त हुआ।

2. मंदिरों व मूर्तियों का विनाश —

तुर्किस्तान आक्रान्ताओं ने भारत आकर मनमाने ढंग से मूर्तियों को नष्ट किया और मंदिरों का विनाश किया। फलतः ईश्वर भक्त हिन्दुओं ने इष्ट-देवता की मूर्ति के आभाव में भक्ति मार्ग को अपना लिया, क्योंकि यही मार्ग उन्हें श्रेष्ठ और निरापद प्रतीत हुआ।

3. जाति-व्यवस्था की जटिलता -

विदेशी मुस्लिम आक्रमणकारियों के प्रभाव से हिन्दू-धर्म को बचाने के लिए वर्ण-व्यवस्था को पहले से अधिक जटिल बना दिया। निम्नजातियों की स्थिति उत्तरोत्तर खराब होने लगी। हिन्दू धर्म में मोक्ष का मार्ग सभी वर्गों के लिए अनुकूल नहीं था, परंतु भक्ति आन्दोलन के प्रवर्तकों ने अपनी उदारता के कारण मोक्ष का द्वार सभी के लिए खोलकर निम्न जाति के लोगों को इस ओर आकर्षित किया।

4. मुस्लिम आक्रमणकारियों के अत्याचार -

कुछ इतिहासकार का मत है कि इस्लाम धर्म के अनुयायियों द्वारा किए गए अत्याचार भी भक्ति आन्दोलन के उद्भव के लिए उत्तरदायी हैं।

5. हिन्दुओं की पलायनवादी प्रवृत्ति -

निरंतर हिन्दू मुस्लिम आक्रमणों के उत्पीड़न के फलस्वरूप हिन्दू ईश्वर की भक्ति की ओर झुकने के लिए बाध्य हुए। इसलिए यह कहा गया था "भक्ति आन्दोलन ने उस भावना का प्रतिनिधित्व किया, जिसे पलायनवाद का नाम दिया जा सकता है" उन्होंने भक्ति में अपना विश्वास रखकर अपने को भूल जाना चाहा।

6. हिन्दू धर्म और जाति की सुरक्षा की भावना -

मुसलमान हिन्दू राज्य को मुस्लिम राज्य

में परिवर्तित करना चाहते थे। अतः उनका हिन्दुओं के प्रति व्यवहार अत्यन्त कठोर और उग्र था। अतः हिन्दुओं ने भक्ति-आन्दोलन के संतों और समाज सुधारकों के माध्यम से अपने धर्म और जाति की सुरक्षा हेतु हर सम्भव प्रयास किया।

7. इस्लाम का प्रभाव —

डा० ताराचन्द, डा० कुरैशी व के० ए० निजामी की मान्यता है कि भक्ति-मार्ग का उदय इस्लाम के सम्पर्क के कारण हुआ। इस्लाम की सरलता, एकेश्वरवाद और जाति-पाँति के विरोध ने हिन्दू धर्मशास्त्रियों का ध्यान उन त्रुटियों की ओर इंगित किया जो हिन्दू धर्म में व्याप्त थीं और उन्होंने उन कमियों को दूर करने का प्रयास किया।

8. राजनीतिक वातावरण —

मुसलमानों के नृशंस आक्रमणों ने हिन्दू समाज पर भयंकर प्रहार किए परंतु धीरे-धीरे उनका उत्साह और कठोरता कम होती गई और विजयनगर में हिन्दू राज्य की स्थापना हुई। मेवाड़ में राजपूतों ने अपनी सत्ता को सुदृढ़ कर लिया जिससे हिन्दुओं को एक बार पुनः संगठित होने का अवसर मिला।

परंतु इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता है कि भक्ति-आन्दोलन से पूर्व चाली

8 - इसके प्रवर्तकों ने सद्गुरु के महत्व पर विशेष बल दिया।

डा० श्रीवास्तव का मत है कि "दूर-दूर तक फैलकर भक्ति-आंदोलन सदियों तक सारे महाद्वीप को प्रभावित करता रहा... बौद्ध धर्म के पतन के बाद भक्ति आंदोलन जैसा देशव्यापी जन-आंदोलन और देश में दूसरा नहीं हुआ।

भक्ति आंदोलन के प्रभाव

इस जन-आंदोलन ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। मुगल काल तक आते-आते सल्तनत-काल की धर्मान्धता का स्थान शेरशाह एवं अकबर की उदार धार्मिक प्रवृत्तियों ने ले लिया था। फलतः मुसलमानों के साथ-साथ हिन्दुओं ने भी देश के राजनीतिक उत्थान में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अकबर की 'सुलहकुल' की नीति भक्ति आंदोलन से प्रेरित थी अतः इस आंदोलन ने भारत की सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक स्थिति को निःसंदेह प्रभावित किया;

1. राष्ट्रीय एकता का उदय -

भक्ति आंदोलन ने राष्ट्रीय भावनाओं के उदय में भी सहायता प्रदान की। मराठों और सिक्ख जाति के अभ्युदय का श्रेय भक्ति आंदोलन को ही है।

था एवं विचारधारा पर्याप्त सीमा तक इस्लाम से प्रभावित थी। डॉ. आर. सी. मजूमदार का मत है कि इस्लाम की प्रजातांत्रिक और उदार भावनाओं ने इस आंदोलन को विशेष रूप से प्रभावित किया।

भक्ति-आंदोलन की विशेषताएँ

1. भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक जनसाधारण को एक कर्मकाण्ड एवं आडम्बरहीन धर्म देने के इच्छुक थे अतः उन्होंने पवित्रता एवं सदाचार पर बल दिया।
2. इस आंदोलन ने जाति भेद पर कठोर प्रहार किया।
3. मूर्ति-पूजा का खण्डन किया और पत्थर के देवता की तुलना में भक्ति पर अधिक बल दिया।
4. हिन्दू-मुस्लिम धर्म में व्याप्त विरोधाभास को दूर करके एकता स्थापित करने का यत्न किया।
5. भक्ति-आंदोलन के प्रवर्तक एकेश्वरवादी एवं विश्वबंधुत्व की भावना के पोषक थे।
6. गृहस्थ आश्रम के माध्यम से मोक्ष-प्राप्ति का पाठ पढ़ाया।
7. धार्मिक आंदोलन होते हुए भी समाज सुधार में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसके प्रवर्तकों ने धार्मिक कुरीतियों पर खुलकर कुठाराघात किया।

2. हिन्दू संस्कृति की रक्षा - संत कवियों ने जिस काव्य का सृजन किया उससे दर्शन के क्षेत्र में विशेष उन्नति हुई। प्रान्तीय भाषाओं को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ और साहित्य में अभिवृद्धि हुई। विभिन्न संतों के ग्रंथ भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि बनकर भारतीय संस्कृति की भी उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3. सम्प्रदायों में समन्वय -

इस आंदोलन ने धार्मिक सहिष्णुता को जन्म दिया। फलतः समाज के दो मुख्य परस्पर विरोधी सम्प्रदाय हिन्दू और मुसलमानों में समन्वय और सामंजस्य की भावना का उदय हुआ जिसके कारण सामाजिक जीवन में समृद्धि, स्थिरता और शांति दिखाई पड़ने लगी।

4. सामाजिक कुरीतियों का अंत -

भक्ति आंदोलन के प्रवर्तकों ने हिन्दुओं का ध्यान सामाजिक कुरीतियों की ओर आकृष्ट किया जो निरन्तर समाज को खोखला कर रही थीं। जाति-भेद को समाप्त करने, हरिजनों के उद्धार और स्त्रियों के उत्थान के लिए इस आंदोलन के संतों ने महत्वपूर्ण कार्य किए। साथ ही सती-प्रथा, शिशु-हत्या एवं अनेक सामाजिक कलंकों को मिटाने में सहायता की और मोक्ष का मार्ग सभी के लिए उन्मुक्त किया।

5. ब्राह्मणों की प्रभुसत्ता का अन्त -

इस आंदोलन के परिणामस्वरूप परम्परागत रूप से चली आ रही ब्राह्मणों की प्रभुसत्ता और धार्मिक विशेषाधिकारों

का काम हो गया। मोक्ष प्राप्त करना भक्तों के अधिकार क्षेत्र में आ गया।

भक्ति आंदोलन के नेताओं के प्रभाव से भारत वासियों के हृदय में सेवा भाव का उदय हुआ। मूर्ति पूजा पूर्ण रूप से समाप्त तो नहीं हुई परंतु बहुत सीमा तक सीमित हो गई। मुसलमानों के अत्याचारों को सहन करने के लिए इस आंदोलन ने हिन्दुओं को नैतिक बल प्रदान किया और धर्मपरिवर्तन न्यूनतम स्थिति को पहुंच गया।

इस प्रकार भक्ति आंदोलन के सुधारकों ने जनभाषा में लोगों को उपदेश दिए और इससे हिन्दी, बंगाली, मराठी, मैथिली और गुजराती आदि भाषाओं की सम्पन्नता में वृद्धि हुई। ~~इस~~ भक्ति आन्दोलन स्वर्ण-युग सिद्ध हुआ।

— OO —